

विचार बिन्दु

बुद्धि से विचार कर किए गए कर्म ही सफल होते हैं। —महाभारत

युक्तियुक्त उपवास एक अद्रव्य औषधि है

आयुर्वेद की दृष्टि से लंचन, उपवास, अपतर्पण आदि पर विस्तृत वैज्ञानिक विश्लेषण उपलब्ध है।तथापि, भोजन के समय और आवृत्ति पर निष्कर्ष सूत्र दिये जाना आवश्यक है। पुनर्वसु आत्रेय अपने शिष्य अनिवेश को सर्वश्रेष्ठ द्रव्यों, भावों और क्रियाओं को समझाते हुये भोजन के सन्दर्भ में कुछ रोचक सूत्र बताते हैं (च.सु.25.40): एकाशनभोजनं सुखपरिणामकरणां श्रेष्ठम्। तालर्यं यह है कि 24 घंटे में केवल एक बार भोजन तत्समय में सुख देने में श्रेष्ठ है क्योंकि यह सुखपूर्वक पच जाता है। कालभोजनमारोग्यकरणां श्रेष्ठम्। तालर्यं यह है कि नियत समय पर भोजन आरोग्य देने वालों में श्रेष्ठ है। ध्यान दीजिये आयुर्वेद में भोजन के दो काल बताये गये हैं, न कि दिन पर कुछ न कुछ खाते रहना। शारीरिक श्रम, न कि बौद्धिक श्रम, करने वाले ही तीन बार भोजन ले सकते हैं। पुनर्वसु आत्रेय ने एक अन्य संदर्भ में निर्दिष्ट किया है कि विषम भोजन से उत्पन्न तमाम अति-कष्टकारी रोगों को देखते हुये बुद्धिमान व्यक्ति को अपनी इन्द्रियों पर काबू पाकर हिताशी, मिताशी और कालभोजी होना चाहिये (च.नि.6.11): हिताशीस्यान्मिताशीस्यात्कालभोजीचेतन्द्रियः। पश्यत्रोगान्वह्-कृष्टान्बुद्धिमान्विषमाशनात्॥ तालर्यं यह है कि हितकर द्रव्यों का आहार करने वाला, अपनी पाचन-शक्ति को देखते हुये भुतिआहार या नपा-तुला भोजन करने वाला और समय पर भोजन करने वाला होना चाहिये।

लेकिन उपवास के सन्दर्भ में इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि अति उपवास दुर्बल करता है (च.सु.21.10-11): सेवा रुक्खापनानां लङ्घनं प्रमिताशनम्। क्रियातियोगः शोकश्च वेगनाश्रित्विनिटाहः॥ रुक्स्थोद्वर्तनं स्नानस्याप्यासः प्रकृतिजर्षा। विकारानुशयः क्रोधः कुर्वन्त्यतिकृशं नरम्॥ उपवासं यह है कि रुक्खा-सूखा व मात्रा से कम खाना और अति उपवास करना, शोषण क्रियाओं की अति, शोक, वेगों व नींद को रोकना, शरीर के रुक्ष रहने पर रुक्ष उबटन व नित्य रुक्ष स्नान्, स्वाभाविक कमजोर गुणसूत्र, वृद्धावस्था, रोगों का लगा जाना, और गुप्सा ईशान को कमजोर कर देते हैं। बहुत अधिक उपवास बात को प्रकुपित करताह व्याधियोंको जन्म देताहै।

उपवास के सन्दर्भ मेंयजुर्विद संहिता की कुछ महत्वपूर्ण बातें निम्नानुसार हैं: (1) दोषाग्निहन्तिबलमिन्द्रियणाम्प्याश्ररंरे स मनोविवृद्धिः। दीर्घायुषेहितकरं सदा वा शान्तिः सदा व्रतमिदंप्रदत्तम्॥ उपवास से दोष साम्य होता है, इन्द्रियों की शक्ति बढ़ती है, और शरीर का पाचन तंत्र सुधराता है। यह दीर्घायु के लिए लाभकारी है और मानसिक शांति प्रदान करता है। उपवास के वैज्ञानिक लाभ भी हैं। व्रत से शरीर की पाचन शक्ति बढ़ती है, रोगों से लड़ने की क्षमता मजबूत होती है, और दीर्घायु की संभावना बढ़ती है।आध्यात्मिक दृष्टिकोण से व्रत मन की शांति प्रदान करता है और दीर्घकालीन शारीरिक व मानसिक संतुलन देता है। (2) मितं च पथ्यं लघु भोजनंवासमसश्चरोपवासं च सर्वविधिनाऽनुवर्त्य। पथ्यंयथायोग्यविधिं च सेवन्आरोग्यमार्गं सदा दौरान हल्का और संतुलित भोजन करना चाहिए। उचित समय पर भोजन करना आवश्यक है, जिससे शरीर की शक्ति बढ़ती है। व्रत के समय सावधानी रखना बहुत जरूरी है। भोजन हल्का, संतुलित और मात्रा में कम होना चाहिए। गलत तरीके से भोजन लेने से शरीर कमजोर हो सकता है। इसलिए व्रत में समय और नियम का पालन करते हुए भोजन करना चाहिए। (3) शाकफलाढ्यं लघु पाचनं तलेनैतन्पथं न हिसेवनीयम्। पथ्यं च सर्वविधिनाऽनुवर्तीतदोषाः प्रशान्ताःभवतिस्थिरत्वात्। व्रत के दौरान हल्का और सुपाच्य भोजन, जैसे साग, फल आदि लेना चाहिए। तलीय भोजन से बचना चाहिए। पथ्य आहार लेने से दोष शांत होते हैं और संतुलन में स्थिर रहते हैं। (4) संयम्यकार्यमसमश्चरोपवासं च सर्वविधिनाऽनुवर्त्य। पथ्यंयथायोग्यविधिं च सेवन्आरोग्यमार्गं सदा व्रतम् तत्॥व्रत के दौरान शरीर और मन को संयम में रखना चाहिए। उचित समय पर नियम का पालन करते हुए यथायोग्य पथ्य आहार लेना चाहिए। यह व्रत सदैव स्वास्थ्य के मार्ग पर ले जाता है। (5) व्रतसमाप्तोऽनियमंविधायपेयाहि पथ्या प्रथमंप्रदिष्टा।लघ्वीपचनतीशरीररुग्द्वयैसुकृतिःप्रयुक्ता॥। व्रत समाप्त होने पर सबसे पहले पेय (हल्का पतला जल) लिया जाता है। यह सुपाच्य होता है और शरीर की शक्ति को पुनः स्थापित करता है। (6) पेयाव्रतः स्निग्धमथार्तवर्धश्चलेपिकामन्दन्चायसायम्। लघ्वी च पथ्या हितकारिका या शरीरवृद्धयैप्रसदातुशोभम्॥ पेया के बाद, थोड़ा गाढ़ा विलेपी लेना चाहिए, जो धीरे-धीरे पचने वाला और शरीर की सेहत को बनाए रखने में सहायक रहता है। (7) यवगुमन्दंपरिपाच्ययुक्ताकृताऽकृतीस्निग्धमधिप्रदिष्टम्। विधाययुक्तं लघु पाचनं तत् दोषान्नशान्तंमनसोविवृद्धिम्॥ इसके बाद बिना मसाले वाली यवागु (जो की खिचड़ी) और हल्के मसालों के साथ यवागु लेनी चाहिए। यह पाचन के लिए अनुकूल होती है और मन को भी शक्ति प्रदान करती है।

आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार भोजन में पोषकतत्वों के विविध प्रकार और मात्रा तथा कैलोरी की मात्रा को जीवन के विभिन्न चरणों में समुचित आहार सुनिश्चित करने के लिये मानकों के रूप में उपयोग किया जाता है। वस्तुतः भोजन की मात्रा और आवृत्ति का संयोजन बुझापे की ओर बढ़ने और बुझापा-जन्य

एक स्वस्थ व्यक्ति के लिये दिन में केवल दो बार किन्तु प्रतिदिन नियत समय पर भोजन करना ही सर्वोत्तम हैं। पूर्वान्ह में नाश्ते को भोजन की तरह लें और फिर कार्यालय या काम से लौटते ही लगी भूख में दूसरा भोजन लें। भोजन के बाद कुछ अनुपान ले सकते हैं, परन्तु दिन भर कुछ न कुछ खाते रहना या चाय पीते रहना अग्नि, स्वास्थ्य, और आरोग्य को नष्ट कर देता है।

की दृष्टि में युक्तिपूर्वक उपवास स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और बीमार व्यक्ति के विकारों का प्रशमन, दोनों में ही लाभकारी है। आयुर्वेद और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण में समानता होते हुये एक मूल अंतर यह है आयुर्वेद में भोजन निर्धारण के कारक अधिक विस्तृत, बहुकोणीय और व्यापक है। इस पर अनेक खण्डों में लम्बी चर्चा होगी। आज का विश्लेषण मूलतः इन प्रश्नों पर केन्द्रित है कि 24 घंटों में भोजन किन्तनी बार लिया जाये और अच्छे स्वास्थ्य के लिये उपवास का महत्व क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर आयुर्वेद, आधुनिक वैज्ञानिक शोध और अनुभव के आधार पर एकीकृत दृष्टिकोण से दिया जायेगा।

समकालीन वैज्ञानिक शोध वस्तुतः भोजन की मात्रा (ऊर्जा या कैलोरी के सेवन के नियंत्रण द्वारा) और भोजन की आवृत्ति (भोजन और उपवास के समय के नियंत्रण द्वारा) में बदलाव के माध्यम से कार्डियोवैस्कुलर बीमारी, मधुमेह, कैंसर, और डिमेंशिया सहित उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने या हिलान्न करने पर केन्द्रित है। इन अध्ययनों से ज्ञात होता है कि हेल्थ-स्थान या रोग-रहित जीवन काल और जीवन-काल में विस्तार उन उपायों से प्राप्त किया जा सकता है जिनमें कुल कैलोरी सेवन में कमी की आवश्यकता हो भी सकती है और नहीं भी। किन्तु आयुर्वेद की दृष्टि में देखें तो केवल दीर्घायु नहीं बल्कि हितायु और सुखायु सम्भालना आवश्यक है। यही कारण है कि आयुर्वेद की दृष्टि में केवल ऊर्जा या कैलोरी के सेवन पर नियंत्रण और भोजन व उपवास के समय के नियंत्रण के भरोसे दीर्घायु, हितायु और सुखायु नहीं प्राप्त हो सकते। भोजन में केवल कैलोरी गिनने की सनक आयुर्वेद का विषय नहीं है।

आइये, आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपवास पर विचार करते हैं (देखें, साईस, 2018, 362:770-775)। पहले हम कैलोरी-रेस्ट्रिक्शन से प्राप्त मॉलिब्ड्यूलर और चयापचय परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसमें कैलोरी की मात्रा और उपवास अवधि भी शामिल है। कैलोरी-रेस्ट्रिक्शन अध्ययनों ने निष्कर्ष स्पष्ट रूप से ड्रॉपित करते हैं कि कैलोरी सेवन में कमी मनुष्यों में वृद्धावस्था के दौरान स्वास्थ्य में सुधार और बीमारी को रोकने के लिए एक प्रभावी हस्तक्षेप हो सकती है। लेकिन दुनिया के सर्वोत्कृष्ट जर्नल में प्रकाशित शोध-विश्लेषण अभी भी इस विषय में एक मत नहीं है।

दूसरा, जहाँ तक टाइम-रेस्ट्रिक्टेड फीडिंग (कुल कैलोरी सेवन में कमी लाये बिना, भोजन-सेवन के समय को 4 से 12 घंटों तक की दैनिक सीमाओं में बांधना) का प्रश्न है,अभी भी शोध निष्कर्ष अंतिम पड़ाव पर नहीं पहुंचे हैं। फिर भी टाइम-रेस्ट्रिक्टेड फीडिंग शरीर के वजन में कमी, ऊर्जा व्यय में वृद्धि, बेहतर ग्लाइसेमिक नियंत्रण और कम इंसुलिन के स्तर, हेपेटिक वसा में कमी, हाइपरलिपिडेमिया में कमी और इन्फ्लेमेशनमें कमी आदि का लाभ देकर बिनाइ हुये समकालीन पाश्चात्य आहार (खुब वसा और खुब कार्बोहाइड्रेट, और परिष्कृत शर्करा) के कई हानिकारक चयापचय परिणामों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान कर सकता है। चयापचयी-स्वास्थ्य पर परिवर्तित भोजन-काल के प्रभाव की मॉलिब्ड्यूलर मैकेनिज्म क्या हो सकती है? दरअसल यह लाभ, 24 घंटे के दौरान उपवास और भोजन के समय और संकेडियन रिदम के बीच सिंक्रनाइजेशन, तालमेल या लयबद्धता के कारण से होना माना जाता है।

तीसरा, जहाँ तक आवृत्तिक या बीच-बीच में उपवास या इंटरमिटेंट-फास्टिंग का प्रश्न है कई अल्पावधि क्लिनिकल ट्रायलस् से ज्ञात होता है कि बीच-बीच के दिनों में उपवास वजन घटाने और कार्डियोमेटाबोलिक स्वास्थ्य के मामले में कैलोरी-रेस्ट्रिक्शन के समान ही लाभ प्रदान कर सकता है। इनमें शरीर के वजन में कमी और बेहतर लिपिड प्रोफाइल, कम रक्तचाप, और इंसुलिन संवेदनशीलता में वृद्धि शामिल हैं।

और अंत में चौथा, फास्टिंग-मिमीकिंग डाइट या उपवास की तरह लगने वालेभोजन का प्रश्न है, यह उपवास के दौरान भोजन से पूर्ण वंचित होने की बजाय कम कार्बोहाइड्रेट औरउच्च वसा वाले आहार की रणनीति है। पांच दिन तक उपवास-जैसा-भोजन कैन्सर, डायबिटीज, कार्डियोवैस्कुलर डिजीज जैसे अनेक पचर्डी के संकेतकों को सामान्य करता है। साथ ही इसका एंटी-पर्जिंग प्रभाव भी देखा गया है। इस प्रकार का उपवास प्रोटोन काइनेज ए और एमटीओआर मार्गों के रेगुलेशन के माध्यम से चूहों में इंसुलिन खाव और ग्लूकोज होमियोस्टेसिस को बहाल करके अनाशयी बीटा कोशिकाओं के पुनर्जनन को बढ़ावा देने, इंसुलिन खाव और ग्लूकोज होमियोस्टेसिस को बहाल करके एंटीडाइबेटिक प्रभाव डालता है। इसके साथ ही यह प्रतिरक्षा प्रणाली के रेगुलेशन के माध्यम से ऑटोप्थ्यून्स बीमारियों के नियंत्रण में मदद करता है। हालांकि इसकी मदद से आयु में वृद्धि के प्रमाण नहीं मिले और जब बहुत बूढ़ेवृहों को इस प्रकार की खुराक दी गयी तो उनमें यह हानिकारक पाया गया।

निष्कर्ष यह है कि एक स्वस्थ व्यक्ति के लिये दिन में केवल दो बार किन्तु प्रतिदिन नियत समय पर भोजन करना ही सर्वोत्तम है। पूर्वान्ह में नाश्ते को भोजन की तरह लें और फिर कार्यालय या काम से लौटते ही लगी भूख में दूसरा भोजन लें। भोजन के बाद कुछ अनुपान ले सकते हैं, परन्तु दिन भर कुछ न कुछ खाते रहना या चाय पीते रहना अग्नि, स्वास्थ्य, और आरोग्य को नष्ट कर देता है। यदि आप उपवास रखना चाहते हैं तो अति न करें। अच्छा होगा कि सप्ताह या 15 दिन में कोई एक दिन तय करके पूरी तरह उपवास रखें। उपवास टूटते ही भोजन पर न टूट पड़ें। उपवास और उसके बाद वाले दिन की संसर्जन क्रम में बॉटटे हुये लघु पेय से प्रारंभ कर गुरु पेय और खाद्य पदार्थ देते हुये एक समयावधि में अग्नि सम करते हुये नियमित भोजन तक आयें। यह युक्ति, संसर्जन का छोटा रूप है। पूरे दिन सही-सही उपवास रखने से मंद जठराग्नि को क्रमशः समत्व तक लाना आवश्यक है। सीधा नियमित गरिष्ठ भोजन ले लेने से मन्दान्गि और आमाशय-क्षोष के कारण पेसा आहार पच नहीं पाता। इससे अजीर्ण और आम बनना और रोगजनन प्रारंभ हो जाता है।

—**अतिथि सम्पादक,**
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त ; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और ‘सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत’ से प्रेरित हैं)

दिवाली अमावस को ही क्यों मनाई जाती है दीपावली मनाई जाने के पीछे धार्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक मान्यता



डॉ॰ जे.के.गर्ग

माना जाता है कि कातक महाने की अमावस्या को देवताओं द्वारा समुद्र मंथन के समय देवी लक्ष्मी क्षीर सागर से ब्रह्माण्ड में अवतरित हुई थी। इसी वजह से कार्तिक महीने की अमावस्या को माता लक्ष्मी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में दिवाली के त्यौहार के रूप में मनाना शुरू किया था भगवान । कृष्ण ने कार्तिक महीने की चतुर्दशी को नरकासुर को मार कर समस्त महिलाओं को मुक्तकरवा के उनकी जान बचाई थी इसलिए दीपावली से एक दिनपूर्व चतुर्दशी को इस घटना को उत्सव के रूप में मनाया जाता है। महाभारत के अनुसार 12 वर्ष के निष्कासन एवं एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद कार्तिक महीने की अमावस्या को पांडव राज्य में सकुशल लौटे थे। पांडवों के वापस लौटने से वहां के लोग बहुत खुश थे, उन्होंने मिट्टी के दीपक जलाकर और पटाछे जलाकर पांडवों के लौटने दिन को मनाना शुरू कर दिया। बहुत समय पहले एक राक्षस था जिसने लड़ाई में सभी देवताओं को पराजित किया और सारी पृथ्वी और स्वर्गको अपने अधिकार में ले लिया। तब माँ काली ने देवताओं , स्वर्ग और पृथ्वी को बचाने के उद्देश्य से देवी दुर्गा के मल्लिक से जन्म लिया था। राक्षसों की हत्या के बाद उन्होंने अपना नियंत्रण खो दिया और जो भी उनके सामने आया उन्होंने हर किसी की हत्या करनी शुरू कर दी। भगवान शिव ने माता काली के चरणों में लेट गये जिससे उनका क्रोध शांत हुआ। बंगाल-उड़ीसा में उस पल को यादगार बनाने के लिए उसी समय से ही दिवाली पर देवी काली की पूजा

अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की स्थापना भी वर्ष 1577 में दीवाली के मौके पर की गयी थी। तीसरे गुरु अमरदास जी ने दिवाली को लाल-पत्र दिन के पारंपरिक रूप में बदल दिया जिस पर सभी सिख अपने गुरुजनों का आशीर्वाद पाने केलिये एक सार्थ मिलते है। सिख धर्म में इस दिन को बंदी छोड़ दिवस के रूप में जाना जाता है महर्षि दयानंद ने वर्ष 1875 में आर्य समाज की स्थापना की थी। महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती ने कार्तिक मास की अमावस्या के दिन अजमेर में निर्वाण प्राप्त किया। उसी दिन से इस दिन को दिवाली के रूप में मनाया जा रहा है। मारवाडी कार्तिक की कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन पर दिवाली पर अपने नए साल का उत्सव मनाते हैं एवं नये बही खाते प्रारम्भ करते हैं। गुजराती भी कार्तिक के महीने में शुक्ल पक्ष के पहले दिन दीवाली के एक दिन बाद अपने नए साल का उत्सव मनाते है।

दिवाली शुरुआत में फसलों की कटाई के उत्सव के रूप में मनाई जाती

दीपोत्सव का शुभारंभ

भुसावर भरतपुर (निस)। भुसावर पांच दिवसीय दीपोत्सव का शुभारंभ धनतरेस पर्व के साथ हुआ। जहाँ भुसावर करवे के राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय विद्यापीठ पर प्रभारी देवीसिंह के नेतृत्व में चंन्द्रदेव पाण्डेय एवं डॉ. सोमेश्र पाण्डेय के साथ साथ ललिता, गीता, रश्मि, दीपक, कमलेश सोनी एवं ओमप्रकाश मीणा द्वारा भगवान धनवन्तरी का पूजन किया । कस्था भुसावर के राजेन्द्र औषधालय पर कार्यक्रम के आयोजक भारत अग्रवाल ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस बर्ष भी धनतरेस पर कस्था भुसावर के राजेन्द्र औषधालय पर भगवान धनवन्तरी का विधिवत पूजन किया गया।

पोकरण, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट, जोधपुर ने पोकरण नगर पालिका द्वारा 26 सितम्बर को जारी 269 पट्टों के निरस्तीकरण आदेश को रद्द कर दिया है। न्यायालय ने यह आदेश याचिकाकर्ता मेहेन्द्र सिंह एवं पृथ्वीपाल सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए पारित किया। मामला न्यायमूर्ति सुलत बेनीवाल की एकलपीठ के समक्ष आया था।

मामले में याचिकाकर्ताओं की ओर से प्रभावी पैरवी अधिवक्ता अशोक कुमार गोदारा (राजस्थान हाईकोर्ट,

नगर कीर्तन का भव्य स्वागत , पाइप बैंड से दी सलामी

बूंदी। हिंद की चादर धन धन श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के शहीदी दिवस नू समर्पित महान नगर कीर्तन देश भर के विभिन्न राज्यो से होता हुआ बूंदी शहर में प्रवेश किया, सिक्ख समाज के द्वारा 5 जगहों पर स्वागत किया गया,देवपुरा नानकपुरिया चौराहे पर सिक्ख समाज ने नगर कीर्तन का ऐतिहासिक स्वागत किया,जेसीबी से पुष्प वर्षा की गई,पाइप बैंड के द्वारा पालकी साहिब जी को सलामी दी गई,नगर कीर्तन उसके बाद आगे बढ़ता

हुआ आनंदी होटल के बाहर ओम एनक्लेव कोलोनो वालों ने स्वागत किया,देवपुरा गुरुद्वारे के बाहर सिक्ख समाज ने स्वागत किया,अहिंसा सर्किल पर सिक्ख समाज के द्वारा स्वागत किया गया,सिंह सभा गुरुद्वारा के बाहर सिक्ख समाज द्वारा स्वागत किया गया,पूरे शहर भर में विभिन्न संगठनों के द्वारा नगर कीर्तन का स्वागत किया गया ,बूंदी अभिभाषक परिषद,बूंदी केमिस्ट संघ, शिक्षक संघ,बूंदी,भाजपा पार्टी द्वारा केएन सिंह

चौराहे पर स्वागत किया गया, कंठोस पीठ के द्वारा कंठोस कार्यालय के बाहर स्वागत किया गया,सिंधी समाज के द्वारा आजाद पार्क के यहां स्वागत किया गया,नगर कीर्तन में पालकी साहिब जी पर संगतों ने सीस निवाकर आशीर्वात लिया,अंत में नगर कीर्तन गुरुद्वारा लंगर साहिब पहुंचा जहा पर सिक्ख समाज द्वारा नगर कीर्तन का ऐतिहासिक स्वागत किया गया, यहां से नगर कीर्तन उदयपुर शहर के लिए रवाना हुआ।

इसलिए समिति द्वारा दी गई अनुशंसा एवं उस पर आधारित आदेश पूर्णतः अवैध एवं विधि के विपरित है। राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता राजेश पंवार ने यह स्वीकार किया कि यद्यपि कुछ पट्टों के निर्गमन में अनियमितता के आरोप हैं, फिर भी निरस्तीकरण की प्रक्रिया विधिक रूप से निर्धारित ढंग से ही की जा सकती है। उन्होंने यह भी सहमति दी कि मामला पुनः विचार हेतु नगरपालिका को भेजा जा सकता है। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के पश्चात्

चौराहे पर स्वागत किया गया, कंठोस पीठ के द्वारा कंठोस कार्यालय के बाहर स्वागत किया गया,सिंधी समाज के द्वारा आजाद पार्क के यहां स्वागत किया गया,नगर कीर्तन में पालकी साहिब जी पर संगतों ने सीस निवाकर आशीर्वात लिया,अंत में नगर कीर्तन गुरुद्वारा लंगर साहिब पहुंचा जहा पर सिक्ख समाज द्वारा नगर कीर्तन का ऐतिहासिक स्वागत किया गया, यहां से नगर कीर्तन उदयपुर शहर के लिए रवाना हुआ।

न्यायालय ने पाया कि सशक्त समिति किसी भी रूप की परिभाषा में नहीं आती है और उसके पास इस प्रकार का निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। इस आधार पर न्यायालय ने 25 सितम्बर की समिति कार्यवाही एवं 26 सितम्बर का निर्णय निरस्तीकरण आदेश दोनों के निरस्त करते हुए, मामला नगरपालिका पोकरण को विधि अनुसार पुनः निर्णय हेतु वापस भेज दिया। अधिवक्ता अशोक कुमार गोदारा ने निर्णय पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा –यह फैसला स्थापित करता है कि किसी भी व्यक्ति

दीपोत्सव उत्सव कार्यक्रम आयोजित

बूंदी। दीपावली की खुशियां बॉटने और जरूरतमंद परिवारों के चेहरों पर मुस्कान लाने के उद्देश्य से रोटरी क्लब 14 अक्टूबर से चलाए जा रहे अभियान के तहत धनतरेस के अंतिम दिन दीपोत्सव उत्सव एवं मिठाई वितरण कार्यक्रम शनिवार को रोटरी सामुदायिक भवन में आयोजित किया गया । प्रोजेक्ट डायरेक्टर हाशम भाई ने बताया कि शहर की विभिन्न क्षेत्र में कार्य करने वाली गरिब और असहाय कामकाजी 50 महिलाओ को फटाके एवं स्वादिष्ट मिठाइयों का वितरण किया गया।

हाईकोर्ट ने पोकरण नगरपालिका का पट्टा निरस्तीकरण आदेश रद्द किया

इसलिए समिति द्वारा दी गई अनुशंसा एवं उस पर आधारित आदेश पूर्णतः अवैध एवं विधि के विपरित है। राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता राजेश पंवार ने यह स्वीकार किया कि यद्यपि कुछ पट्टों के निर्गमन में अनियमितता के आरोप हैं, फिर भी निरस्तीकरण की प्रक्रिया विधिक रूप से निर्धारित ढंग से ही की जा सकती है। उन्होंने यह भी सहमति दी कि मामला पुनः विचार हेतु नगरपालिका को भेजा जा सकता है। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के पश्चात्

न्यायालय ने पाया कि सशक्त समिति किसी भी रूप की परिभाषा में नहीं आती है और उसके पास इस प्रकार का निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। इस आधार पर न्यायालय ने 25 सितम्बर की समिति कार्यवाही एवं 26 सितम्बर का निर्णय निरस्तीकरण आदेश दोनों के निरस्त करते हुए, मामला नगरपालिका पोकरण को विधि अनुसार पुनः निर्णय हेतु वापस भेज दिया। अधिवक्ता अशोक कुमार गोदारा ने निर्णय पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा –यह फैसला स्थापित करता है कि किसी भी व्यक्ति

के वैधानिक अधिकार को छीना नहीं जा सकता जब तक कि विधि द्वारा निर्धारित प्रक्रिया का पालन न किया जाय। सशक्त समिति केवल अनुशंसा दे सकती है, किंतु निर्णय लेने का अधिकार नगरपालिका को ही प्राप्त है। यह आदेश कानून के शासन और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों की सुदृढ़ पुष्टि करता है। न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया कि यह आदेश केवल याचिकाकर्ताओं मेहेन्द्र सिंह एवं पृथ्वीपाल सिंह के प्रकरण तक सीमित रहेगा और अन्य 269 पट्टों पर इसका स्वतः प्रभाव नहीं पड़ेगा।

राशिफल रविवार 19 अक्टूबर, 2025	
राशिफल	
	
कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत २०८२, उतरा फाल्गुनी नक्षत्र सायं ५:५० तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि २:०४ तक, वणिज करण दिन 1:५२ तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।	
ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरु-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।	
आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय के सम्पूर्ण दिन-रात है। आज सिद्धि योग सायं ५:५० से सूर्योदय तक है। भद्रा दिन 1:५२ से रात्रि २:४८ तक रहेगी। आज धनवंतरी जयन्ती, नरक और रूप चतुर्दशी निमित्त दीपदान एवं आगामी अरुणोदय काल में प्रभात स्नान और आज मास शिवरात्रि, श्री हनुमान जयन्ती, पदम प्रभु जयन्ती है।	
श्रेष्ठ चौघड़िया: चर ७:५७ से 9:२२ तक, लाभ अमृत 9:२२ से 1२:२२ तक, शुभ १:३७ से ३:०२ तक।	
राहूकाल: ४:३० से ६:०० तक। सूर्योदय ६:३२, सूर्यास्त ५:५१	

मे़ष	सिंह	धनु
 अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। आज किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	 आर्थिक कारणाों से अटके हुए कार्य बरने लगेंगे। संभावित ख़ोते से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आज परिवार में अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।	 व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बरने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।
वृष	कन्या	मकर
 आज परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।	 व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।	 परिवार में शुभ-मंगलिक संदेश प्राप्त हो सके हैं। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
मिथुन	तुला	कुंभ
 घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।	 घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज घर-परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है। आज व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।	 अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
 परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	 आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में शुभ-मंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।	 परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। समूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

डरने वाले, डर में ही जीने वाले, डरपोक एवं जो सिर्फ अपने लिए ही धन इकट्ठा करने वाले होते हैं

धर्म शास्त्रों में उल्लेखित मान्यता निर्बिबाद और सही है, किन्तु आज के माहौल को देख आत्मा स्वयं से सवाल करती है और तर्क-वितर्क भी करती है क्यों माता लक्ष्मी आज धन-संपदा से ईमानदारों, बुद्धीजीवियों, सत्यवानदीयों और कानून में विश्वास रखने वालों के बजाय भ्रष्टाचार अनाचार में लिप्त, सजायापाता स्त्री-पुरुष, जनसाधारण का शोषण करने वाले लोगों को उपकृत करती दिखाई दे रही है, क्यों समाज के कंटक, गुंडे लोग ऐशोंआराम की जिंदगी जी रहे हैं? क्यों बुद्धीजीवीयों को अनपढ़ाओं के आदेश मानने पड़ रहे हैं? क्यों सत्यवादी आदमीयों के लिये अस्पृं अपनी न्यूनतम जरूरतों को पूरा करने के लिये भी संघर्ष करना पड़ रहा है ? क्यों जुमलेबाज लोगों को मूर्ख बना कर अपना हित साध पाने में सफल हो रहे हैं? सच्चाई तो यही है कि परमात्मा के न्याय में देरी तो हो सकती है किन्तु डर-सबेर न्याय जरूर मिलता है । प्रभु ईसामसीह कहते थे कि सुई की नोक के अंदर ऊँट तो भले ही प्रवेश कर सकता है किन्तु गलत तरीकों से धन कमाने वाला व्यक्ति कभी भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता है उनको तो माया लक्ष्मी भ्रमित करती है मोक्ष दायनी माँ लक्ष्मी उनसे कोसो दूर रहती है और ऐसे धनिक मनुष्य को जीवन के किसी प्रयास पर असाध्य रोगों बीमारियों से और अनचाही तकलीफों के शिकार होते हैं उनके परिजन धन की अधिकतता की वजह से पथ प्रष्ट होकर नारकीय जीवन जीते हैं। माने या नहीं माने ऐसे आदमियों के परिजन परिवार की प्रतिष्ठता को कलंकित करते हैं । गुरु नानक देव जि ने बतलाया था कि नेकी की कमाई ही सच्चा सुख सम्पत्ता प्रदान करती है ।

—**डॉ॰ जे.के.गर्ग,**
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज , शिक्षा जयपुर